

१- दोहा: जो न होय कुदृष्ट गुनि, ली द्युतिवन्त विशाल।
चिति रज भूमि विलोकिअ, करि के दया कृपास

२- कसो है पूजा तव, उतारती उतार हाम, जानि परत आज दिन अनिष्ट तुम्हारा है।
श्री शोधचिन्मयी के हृदयों से तुम वने हो नाम, स्वतः विश्व कर्म निज कर से सँभल है।
जानकी की भाँज मे सिद्ध दिलवाने हित, प्रण है हमारे पर आसरा तुम्हारा है।
श्री कृत विपुली जी के परम पुनीत धनु आज तुम्हें, अनिष्ट प्रणाम मह हमारा है।
शुद्धा - देखना नाथ मेरे प्रण भी कर्मों न हो जाने पाये।

भगवत की वही प्रतिष्ठा पर, कुछ भाँच नहीं जाने पाये ॥
वचन से ही जिस सीताने, तब सेवा का है भार लिमा।
भगवन उस सीता के सेवा की लाज नहीं जाने पाये
पृथ्वी वीरों से प्रेरित है, इस पर प्रण कर आता मैंने
हे देव हमारे इस प्रण का विश्वास नहीं जाने पाये

३- (वाणासुर से) दारपाल से
आहु पर्विमा वेगितुम, लोह चहु दिशि और
सुमति विमोते भगवन्दीवर, इन को लावहु हरि
(बन्दी से)

४- देश-२ के चपते सब, सिमिहि भये डकड़ोर
चहु और से पैरिहर, आहु कहे प्रण मोर
(वाणासुर से)

१- दानवेन्द्र कोही रुपा आप अधिष्ठ सुख दीन

१- (शिवजी से)
शिवाहि क्रायहु सोच प्रण, देके धनुष विशाल
ताहि चढाहु हरपाइके, तोहि सुता दश माल
पिनु धनु भजे सुता भग्न कौन निहारस हार
करे प्रण पूरण लिजिये

(शिवजी के आने पर)
आय गयो कही दुख मह समा भाँज वलवान,
दरिद परत आव कुशल नहि, कह करत भगवान

(चनुष न इहो पर)

अब तक तो बहुत भरोसा था, पर आज सहारा टूट गया
जितना था। हरि कि हर्ष मुझे, वह सब सुख मेरा टूट गया
प्रण किया था, मैं, पर हँसी हुई, जीवन का सहारा टूट गया
किसी तुम सब का दोष नहीं, मेरा ही विचार कूट गया
हल जौल से जो कन्या मिली, उसको मैं हाम वक्षन सका
दोहा है पिता का कर्तव्य जो, उसका पालन मैं कर न सका
याह का साज सजाया सभी, पर सरे वारात बुलान सका
मिलना है पाप हमारा कि, मैं माँग किया का भरण सका
सुखी तेरी यह कन्या है, व हो ले जा ब्रह्मा इसे आज
अधिकाधिक सब या दे सुहाग, माँ व ही सब ले मेरी लाज
(सीतासे)

वही मुझको न पिता कहना, मैं पिता कहने योग्य नहीं
प्रण वन्दन मैं वंद्य कर जग में, अब कुछ दिखलौने योग्य नहीं
सिंदूर बिंदु की आस लजो, अब तुमको योग रमाना लिखा
भूषण वस्त्रों का त्याग करो, अब तुमको भस्म रमाना लिखा
रुद्राक्ष की माल गले पहनो, शिव पूजन ध्यान लगाना लिखा
अब पाणि ग्रहण की आस लजो, तुमसे क्वचि रह जाना लिखा

हैं हमारे शिव चनुष, अब क्या करें कुछ तो बता दो
आपका है आसरा, कोई राह तो मुझको दिखा दो
मैं भगवत भक्त शान्त था, वश आसरा लेकर तुम्हारा
किंतु सेवक बन जाते, नाथ ने कैसे विसारा
देव मेरी दशा देखो, मैं हृदय से अविकल हूँ
मारली पग पर कुल्हाड़ी, वश इसी से दुरित हूँ।
जो शर्म आरच दिया, सीता स्वप्न का विधान
पर नहीं मालूम था, यह काम है इतना महान
देह-चाहे छूट जाये, पर नहीं प्रण छूट सकता
वीरता से शून्य मोह, भक्त क्या यह हल न सकता

(पुनः)

Cont.

हे दीप- २ के राजा गण, हम किसी को वलवाली है
 हमको तो विश्वास हुआ पृथ्वी वीर से खाली है
 यदि यह विचार पहले होता, तो ऐसी हमी नहीं होती
 में यह पण खवता ही नहीं, तो यह दुर्गती नहीं होती
 आकरा छोड़ प्रश्नान करो, हम समा जोड़कर पछताने
 सीता सुकुमारी का विवाह, लिखा नहीं विधाताने
 यदि हम अपना पण छोड़, तो चर्मजाम अकलापजा है।
 सीता को वचारी रहना है, वमा के हमारा ब्रह्म हो नमा
 वीरों वणधीरों चर जावो, पण हुआ न पूर्ण हमारा है
 तुम सब का मद अब भोग हुआ, विश्वास भी चूर्ण हमारा है
 हमको ही है ज्ञाते ही कष्ट दाय, मेरी सब आशा क्षीण हुई
 निश्चय हो गया आज मुझको, यह पृथ्वी वीर विहीन हुई

(परशुराम से)

कहाँ चाप भस्व हेतु आप, सुनहुँ नाथ चित लाइ
 रुक समय सिम हाँप से, ली हो चाप चढ़ाई
 अजित अगिर प्रभुता विलौकि के, आदि शक्ति जिय जानि
 आपने सुता स्वयंभ्वरहित यह प्रतिज्ञा खानि

(विश्वामित्र के पास पहुँच कर प्रणाम के बाद)

- १- गुरदेव आज आपना देवान देकर इस सौवक को कृतार्थ किया
हूँ। मैं उस निवेदन पर ध्यान दे।
राधा - हे आप कृपा निधि विद्यानिधि, धर्मनि धर्म संचालक है
ये श्यामल गौर विशोर जो है, ये किसके सुन्दर पालक है
इनमें कुछ देवी शक्ति है, यह मुझे दिखाइ पड़ता है।
इनका दर्शन कर महाराज मन मेरा ब्रह्म से चलता है
एकटकी वँची हो जाती है कुछ कद मुत नेह हुआ।
मेरा, पर मे हो आज विदेह

२- दारपाल से। बाली

इस समय यज्ञ भूमे में आने का राजा। गण पत्वारि युक्ते
लुभ जा कर सबको अर्पित स्नान देना वेंकटा